PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Business Bhaskar, Faridabad
Sunday 26th January 2014, Page: 12
Width: 25.43 cms, Height: 31.30 cms, a3, Ref: pmln.2014-01-26.43.19

बेहतर होगी सेहत

मेडिकल सुविधाओं के विस्तार, गंभीर बीमारियों के फैलते जाल, पेटेंट उत्पादों की लांचिंग और नए बाजारों की तलाश से,

फार्मा सेक्टर की ग्रोथ तेज रहेगी...

14%
हिस्सेदारी है अमेरिका के जेनरिक मार्केट में भारतीय कंपनियों की

73%
है फार्मा उद्योग में भारतीय कंपनियों की हिस्सेदारी

75,000
करोड़ रुपये है मौजूदा समय में भारत में फार्मा सेक्टर का आकार

2015 तक 24 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा फार्मा सेक्टर

10 साल में भारतीय फार्मा कंपनियों ने विदेश में 60 अधिग्रहण किए

13-14% रही है पिछले पांच सालों से फार्मा सेक्टर की ग्रोथ

70 शहर में अस्पतालों को अपने नेटवर्क का तेजी से विस्तार करना होगा

"

हाल में कुछ कंपनियों पर अमेरिका के एफडीए ने आपत्ति जताई है जिससे भविष्य में इन कंपनियों को अपनी गुणवत्ता में सुधार करना होगा।

...सुनील जैन,
वाइस प्रेसिडेंट, निर्मल बंग

फार्मा उद्योग की विकास दर अच्छी रहेगी। लेकिन, कुछ कंपनियों के जेनरिक निर्यात पर असर पड़ सकता है।

...के आर चोकसी,
एमडी, के.आर. चोकसी

उद्योग के कुछ सेक्टर ऐसे हैं, जिन पर अर्थव्यवस्था के उतार-चढ़ाव का बहुत कम असर पड़ता है। इसलिए इन्हें डिफेंसिव सेक्टर कहा जाता है। फार्मा ऐसा ही सेक्टर है। देश का फार्मा सेक्टर ₹75000 करोड़ का है। इस सेक्टर की ग्रोथ काफी अच्छी रही है। 2013 में इसकी सेक्टर का ग्रोथ रेट 9.8% रहा। एक साल पहले 2012 में यह 16.6% था। हालांकि, कुछ बड़ी कंपनियों को अमेरिका जैसे अहम बाजारों में दिक्कतों का सामना करना पड़ा है।

55 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा सेक्टर

फार्मा सेक्टर पर कंसलटेंसी फर्म मैकेंजी की रिपोर्ट के मुताबिक, यह सेक्टर 12-14% सीएजीआर की दर से विकास करेगा। 2015 तक इसका आकार 20 से 24 अरब डॉलर तक पहुंच जाने का अनुमान है। साल 2020 तक इसका आकार 55 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। लोगों की खर्च करने योग्य आय में बढ़ोतरी, मेडिकल सुविधाओं के विस्तार, गंभीर बीमारियों के फैलते जाल, स्वास्थ्य बीमा के बढ़ते कवरेज, पेटेंट उत्पादों की लांचिंग और नए बाजारों की तलाश से फार्मा सेक्टर की ग्रोथ तेज रहेगी।

शहरों में बढ़ेगी मेडिकल सुविधाएं

रिपोर्ट के अनुसार, पिछले पांच सालों से फार्मा सेक्टर की ग्रोथ 13-14 फीसदी रही है। भारत में अस्पतालों में हर साल साल 160,000 बिस्तर बढ़ रहे हैं। प्रति हजार आबादी पर डॉक्टर की उपलब्धता के आंकड़े में भी सुधार हो रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय फार्मा इंडस्ट्री में बड़े शहरों का योगदान 30 फीसदी के करीब है। पिछले पांच सालों में इनकी वृद्धि दर 14-15 फीसदी रही है। अगले दो दशकों में ग्रामीण इलाकों से 25 करोड़ लोगों के शहरों में पलायन करने का अनुमान है। इससे देखते हुए 70 शहर में अस्पतालों को अपने नेटवर्क का तेजी से विस्तार करना होगा।

बायोसिमिलर में तेज ग्रोथ

के.आर. चोकसी के एमडी देवेन चोकसी कहते हैं कि फार्मा उद्योग की विकास दर अच्छी रहेगी। लेकिन, कुछ कंपनियों के जेनरिक निर्यात पर असर पड़ सकता है। फार्मा कंपनियों की पाइपलाइन में जेनरिक काफी कम हैं। बायोसिमिलर का समय आगे अच्छा रह सकता है, क्योंकि कंपनियों का फोकस इस पर है। उनके मुताबिक अमेरिकी बाजार में भारतीय कंपनियों के लिए थोड़ी दिक्कत हो सकती है, क्योंकि क्वालिटी मैन्युफैक्चरिंग पर इन कंपनियों का ध्यान कम रहता है। वे कहते हैं कि इस सेक्टर में निवेश के लिहाज से डॉ. रेड्डी, बायोकॉन और ग्लेनमार्क जैसे स्टॉक अच्छे हैं।

किन कंपनियों में करें निवेश?

के.आर. चोकसी के एमडी देवेन चोकसी कहते हैं कि निवेश के लिहाज से इस समय डॉ. रेड्डी, बायोकॉन और ग्लेनमार्क के शेयर बेहतर दिख रहे हैं। बैंक ऑफ अमेरिका मेरिल लिंच की रिपोर्ट के मुताबिक, सन फार्मा, अरबिंदो फार्मा, डॉ. रेड्डी और ल्युपिन जैसी कंपनियों की ग्रोथ तेज बनी रहेगी। निर्मल बंग फाइनेंशियल सर्विसेस के वाइस प्रेसीडेंट सुनील जैन का कहना है कि अभी सन फार्मा, ल्युपिन और एलेंबिक फार्मा जैसी कंपनियों के शेयर अट्रैक्टिव लेवल पर हैं।

क्वालिटी में सुधार जरूरी

निर्मल बंग फाइनेंशियल सर्विसेस के वाइस प्रेसीडेंट सुनील जैन कहते हैं कि फार्मा कंपनियों की वृद्धि दर लगातार अच्छी बनी रहेगी। अगर इंडस्ट्री की औसत ग्रोथ देखें तो यह 15-20 फीसदी रही है। इसमें कुछ कंपनियां 12 फीसदी से तो कुछ 25 फीसदी की दर से विकास कर रही हैं। अमेरिकी बाजार से इन कंपनियों को अच्छा राजस्व मिल रहा है। पर हाल में कुछ कंपनियों पर अमेरिका के एफडीए ने आपत्ति भी जताई है जिससे भविष्य में इन कंपनियों को अपनी गुणवत्ता में सुधार करना होगा। निवेश के लिहाज से इस समय सन फार्मा, ल्युपिन और एलेंबिक फार्मा जैसी कंपनियां बेहतर दिख रही हैं।

विदेश में बढ़ेगा कारोबार

वोकहार्ट समूह के चेयरमैन हबील खोराकीवाला की मानें तो भारतीय फार्मा उद्योग में भारतीय कंपनियों की हिस्सेदारी 73% है और बाकी 27% हिस्सेदारी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की है। पिछले दस सालों में विदेशी कंपनियों ने भारत में 45 अधिग्रहण किए हैं, जबकि इसी दौरान भारतीय फार्मा कंपनियों ने विदेशों में 60 अधिग्रहण किए हैं, जिसका कुल वैल्यू 4 अरब डॉलर के ऊपर रहा है। उनके मुताबिक इससे यह संकेत मिलता है कि भारतीय फार्मा कंपनियां न केवल अपने घरेलू व्यवसाय का विस्तार करना चाहती हैं, बल्कि वे विदेश में कंपनियों को खरीद कर भी अपना व्यवसाय बढ़ा रही हैं। अमेरिका के जेनरिक व्यवसाय में भारतीय कंपनियों का साल 2002 में कुल हिस्सा 2% था, जो अब बढ़कर 14% से अधिक हो गया है। बैंक ऑफ अमेरिका मेरिल लिंच की रिपोर्ट के मुताबिक चालू वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही में फार्मा कंपनियों की वृद्धि दर 26% रहने की उम्मीद है, जिसमें एबिट्डा की वृद्धि दर 37% और शुद्ध लाभ की वृद्धि 40% के करीब होगी।

प्रमुख कंपनियां

राजस्व, शुद्ध लाभ के आंकड़े सितंबर तिमाही के और करोड़ रुपये में

पूंजीकरण | राजस्व | शुद्ध लाभ

▶ **डॉ. रेड्डीज लैब**
₹45259 करोड़
₹773 करोड़
₹2707 करोड़

▶ **सिप्ला**
₹33309 करोड़
₹376 करोड़
₹2347 करोड़

▶ **डिवीज लैब**
₹17623 करोड़
₹205 करोड़
₹567 करोड़

▶ **सन फार्मा**
₹124829 करोड़
₹6.30 करोड़
₹678 करोड़

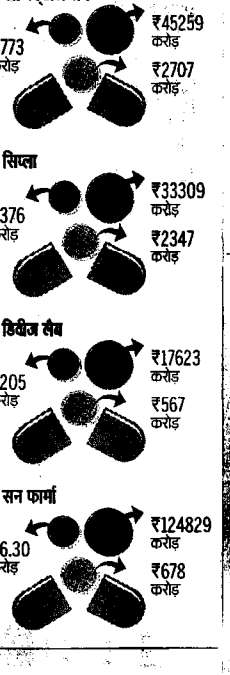

6